''तेरा नाम पवित्र माना जाए''

यीशु ने हमें समझाया कि प्रार्थना में परमेश्वर से मांगना चाहिए कि ''तेरा नाम पवित्र माना जाए'' (मत्ती 6:9)। क्या नाम को कुछ होता है? बहुत से लोग ज़ोर लगाकर कहते हैं, ''नहीं।'' उन्हें इस बात का अहसास नहीं होता कि वे चेलों की प्रार्थना में पहली ही बिनती को रद्द कर रहे हैं। जो व्यक्ति नाम के महत्व पर विश्वास नहीं करता वह आत्मा से और समझ से ''तेरा नाम पवित्र माना जाए'' (मत्ती 6:9) की प्रार्थना नहीं कर सकता। यदि नाम का कोई महत्व नहीं है, तो पिता के नाम के पवित्र माने जाने या अपवित्र होने से कोई फर्क नहीं पड़ता।

बहुत से लोग विलियम शेक्सपियर को उद्धृत करते हुए कहते हैं: ''नाम में क्या है? गुलाब को यदि कोई दूसरा नाम दे दिया जाए तो उसकी सुगन्ध तो मीठी ही रहेगी।''[1] यह प्रमाणित करने के लिए कि धर्म में अच्छा क्या है जब कोई बाइबल को छोड़कर शेक्सपियर के पास जाता है, तो वह यह मान रहा होता है कि वह बाइबल से सहमत नहीं है। यदि गुलाब के इस उदाहरण से यह नियम बना लिया जाए कि एक नाम दूसरे की तरह ही अच्छा है, तो फिर तर्कसंगत रूप से बालजबूल का नाम भी पिता के नाम की तरह ही अच्छा है। आइए बाइबल की सच्चाइयों को प्रमाणित करने के लिए जीव विज्ञान तथा अंग्रेज़ी साहित्य से निकलकर बाइबल में चलें। चेलों की प्रार्थना में पहली बिनती पर ध्यान देने पर, हम पाएंगे कि नाम का महत्व है। यीशु का भी यही मानना था और वह चाहता था कि उसके चेले भी ऐसा ही सोचें। वह चाहता था कि प्रार्थना करते समय उसके चेलों को परमेश्वर के नाम के महत्व की समझ होनी चाहिए।

एक पवित्र नाम

उस सर्वशक्तिमान का नाम बिना सोचे समझे नहीं लिया जाना चाहिए। यीशु चाहता है कि आप अपने मन की गहराइयों से चाहें कि मनुष्यों तथा स्वर्गदूतों में परमेश्वर का नाम बड़े सम्मान से लें। उसका नाम पवित्र होने के कारण, उसे अपने आप ही सबसे ऊपर और सबसे ऊंचा स्थान दिया जाता है, और उसका साधारण उपयोग नहीं किया जा सकता। ऐडम क्लार्क ने ध्यान दिलाया कि यूनानी शब्द का अनुवाद ''पवित्र'' दो विचारों ''पृथ्वी'' और

''नहीं'' से बनता है; इसलिए, पिता का नाम ''पृथ्वी का नहीं'' है और उसे उसके पांवों की चौकी पर नहीं खींचना चाहिए।

''हल्लिलूयाह!''

भीड़ का शोर, बहुत से झरनों की झर-झर, और बिजली की भयंकर गड़गड़ाहट की तरह यूहन्ना पर एक अद्‌भुत शब्द प्रकट किया गया था। उसे स्वर्गदूतों के '' *हल्लिलूयाह !*'' गीत को सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ था (प्रकाशितवाक्य 19:1, 3, 4, 6)।

जैसा कि मैं बहुत देर तक सोचता था, कि यह महान शब्द समाधि में लीन होकर भावनात्मक पुकार नहीं बल्कि एक आज्ञा है: ''प्रभु की महिमा करो!'' हमारे पास प्रकाशितवाक्य 19 में यूहन्ना द्वारा चार बार सुना गया यह शब्द (*हल्लेलूयाह*) यूनानी रूप से आया है, जबकि इसका मूल इब्रानी है। दो शब्दों से बने, *हलल* और *याह* के योग से बने इस शब्द का अर्थ है ''याहवेह की स्तुति करो!'' मेरे पास पड़ी अमेरिकन स्टैण्डर्ड वर्ज़न की प्रति में एक टिप्पणी दी गई है, ''Heb. *Hallelujah.*'' इसलिए, जब आप इस महान शब्द को समझ के साथ गाते हैं, तो आप परमेश्वर के नाम की घोषणा करके उसके नाम का भय मान रहे होते हैं।

नाम का अनादर करना

बार-बार (लैव्यव्यवस्था 18:21; 19:12; 20:3; 21:6; 22:2), मूसा ने परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेने के विरुद्ध चेतावनी दी थी। ऐसा भी समय था जब इसे इतना पवित्र माना जाता था कि इस नाम का अपमान और दुरुपयोग करने के कारण एक व्यक्ति को गिरफ्तार करके उसे कैद में डाल दिया जाता था। जिसने भी उसके द्वारा की गई परमेश्वर निन्दा को सुना था, उसने उसे ''डेरे से बाहर'' ले जाते समय वहां उपस्थित होना था (लैव्यव्यवस्था 24:11-14) और हर एक गवाह को उस व्यक्ति के सिर पर हाथ रखकर चलना होता था जिससे यह प्रमाणित होता हो कि उसने उस बात को जो आरोपी ने कही थी, सुना है। उसके बाद उसे पत्थर मारे जाते थे।

नाम लेना

परमेश्वर अपने नाम के किसी भी प्रकार के निन्दात्मक इस्तेमाल के प्रति बहुत कठोर था और उसने पत्थर पर लिख दिया था कि उसका नाम किसी भी प्रकार से व्यर्थ न लिया जाए (निर्गमन 20:7)। उसने यह कभी भी नहीं चाहा था कि उसका नाम इतना पवित्र माना जाए कि मनुष्य उसे अपने होंठों पर न ला सकें। ऐसा अन्धविश्वास बढ़ा और आज भी यहूदियों में पाया जाता है।

परमेश्वर ने आज्ञा दी थी कि जो भी नाम का दुरुपयोग करे उसे पत्थरवाह किया जाए (लैव्यव्यवस्था 24:16), और इस तीसरी आज्ञा को न समझ पाने के कारण, रब्बियों ने यह शिक्षा दी कि परमेश्वर का नाम आगे न बताया जाए, मुंह से न निकाला जाए, यह इतना

पवित्र है कि पापी होंठों से उसका उच्चारण नहीं होना चाहिए। जबकि, परमेश्वर की चेतावनी केवल नाम का अपमान करने के विषय में थी न कि नाम लेने के बारे में। यदि नाम का उच्चारण होना चहिए था, तो निश्चय ही बाइबल के समयों में बहुत से भले लोगों द्वारा इस नाम का इस्तेमाल न किया जाता परन्तु पुराने नियम में यह लगभग 6,873 बार[2] मिलता है।

इब्रानी शब्द का संक्षिप्त रूप भजन 68:4 में मिलता है: ''जो निर्जल देशों में सवार होकर चलता है, उसके लिए सड़क बनाओ; उसका नाम याह है, इसलिए तुम उसके साम्हने प्रफुल्लित हो।'' इस संक्षिप्त शब्द का अर्थ यह नहीं है कि नाम लिया ही नहीं जा सकता; बल्कि इससे सुझाव मिलता है कि इस नाम का इस्तेमाल बहुत होता था। इस्राएली लोग अपने आपको परमेश्वर के बहुत निकट मानते थे और उसका नाम ढिठाई से नहीं बल्कि खुलकर और बड़ी श्रद्धा से बिना हिचकिचाहट से लेते थे।

''भय'' नाम

भजन 111:9 का उन लोगों द्वारा अनजाने में दुरुपयोग हुआ है जो यह संकेत देते हैं कि अंग्रेज़ी बाइबल में केवल एक ही जगह ''reverend'' शब्द आया है, और वह यहां पर स्वयं परमेश्वर के लिए इस्तेमाल हुआ है।[3] सच तो यह है कि अंग्रेज़ी की बाइबल में जिस शब्द का अनुवाद यहां ''reverend'' (इब्रा.: *yare'* जिसका अनुवाद हिन्दी में ''भय योग्य'' है) हुआ है, पुराने नियम में तीन सौ से अधिक बार मिलता है। इब्रानी शब्द *yare'* का अर्थ है ''भय खाना'' या ''डरना।'' लूत किसी नगर में रहने से डरता था (*yare'*; उत्पत्ति 19:30)। फिर, मूसा ने आज्ञा दी कि, ''तुम अपनी-अपनी माता और अपने-अपने पिता का भय [*yare'*] मानना ...'' (लैव्यव्यवस्था 19:3)। इस्राएली लोग मूसा, यहोशू और परमेश्वर से डरते या उनका ''भय रखते'' (*yare'*) थे (यहोशू 4:14; लैव्यव्यवस्था 19:14)। भजन संहिता 111:9 की यह महान आयत परमेश्वर के नाम को महिमा देती है। नाम आदर, भक्तिपूर्ण भय तथा डर के योग्य है। यही शब्द (*yare'*) व्यवस्थाविवरण 28:58 में दो बार इस्तेमाल हुआ है: ''... उस आदरणीय और *भय योग्य* नाम का, जो यहोवा तेरे परमेश्वर का है *भय* ...'' मानना।

कंपकपाते हुए सीनै पर्वत पर बादलों में से प्रभु के उतरने, मूसा के पास से गुज़रने और नाम की ''घोषणा'' करने पर निश्चय ही एक गहरा सम्मान तथा पवित्र भय छा गया था: ''... यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य'' (निर्गमन 34:6)।

फिर परमेश्वर ने सुन्दर और याजकों की विश्वप्रसिद्ध यह आशीष दी थी:

> यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे:
> यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए,
> और तुझ पर अनुग्रह करे:

यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे,
और तुझे शांति दे
(गिनती 6:24-26)।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने अपना नाम उन धन्य शब्दों में तीन बार बिना सोचे समझे नहीं डाला, क्योंकि उसने बताया: ''इस रीति वे मेरे नाम को इस्राएलियों पर रखें, और मैं उन्हें आशीष दिया करूंगा'' (गिनती 6:27)।

हर कोने पर चमकते हुए करुबियों के साथ सुन्दर सोने के एक संदूक पर ही परमेश्वर अपने लोगों से मिलता था (निर्गमन 25:22)। एक से दूसरे स्थान पर ले जाते समय उस संदूक को न तो देखते थे और न ही उसे छुआ जाता था (गिनती 4:5, 6)। अनाधकारिक व्यक्ति जिन्होंने इसे चाहे ''क्षण भर के लिए'' ही देखा, वे मर गए थे (गिनती 4:20)। इसे पृथ्वी पर अतिपवित्र स्थान अर्थात परमपवित्र स्थान पर रखा गया था (निर्गमन 26:33; 40:21)। इस पवित्र संदूक को बिल्कुल सही ''उस नाम से, अर्थात सेनाओं के यहोवा के नाम से जाना जाता'' था जो करुबियों के मध्य विराजमान है (2 शमूएल 6:2)।

नाम की सामर्थ

परमेश्वर के नाम के सामर्थ की समझ प्रत्येक विश्वासी यहूदी को थी। युवक दाऊद सेनाओं के यहोवा के नाम में गोलियथ के सामने खड़ा होने से नहीं डरा था (1 शमूएल 17:45)। उसी युवक को, ''इस्राएल का मधुर गायक'' बनने के बाद प्रत्येक यहूदी को समझाने की प्रेरणा मिली थी:

याह की स्तुति करो
हे यहोवा के दासो स्तुति करो,
यहोवा के नाम की स्तुति करो!
यहोवा का नाम अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहा जाए!
उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक,
यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है
(भजन संहिता 113:1-3)।

परमेश्वर से प्रार्थना करना

जैसे दाऊद के समय में और यीशु द्वारा चेलों को प्रार्थना करना सिखाने के समय भी वह ईश्वरीय नाम धन्य और सर्वशक्ति का स्वामी था, आज भी जब केवल परमेश्वर के नाम में प्रार्थना की जाती है तो वह छत से ऊंची नहीं जा सकती। आप परमेश्वर के पास परमेश्वर के नाम से ही नहीं पहुंच सकते! पिता के अपने ही प्रबन्ध के अनुसार परमेश्वर तथा मनुष्यों में एक बिचवई बनाया गया है (1 तीमुथियुस 2:5)। उसकी अपनी ही शुभ इच्छा से, सब

बुद्धि के स्वामी पिता ने सबको मसीह में इकट्ठे करने की योजना बनाई (इफिसियों 1:10)। परमेश्वर-मनुष्य की स्थिति इतनी महत्वपूर्ण है कि वह इतना अद्‌भुत कथन कह पाया: ''*मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता*'' (यूहन्ना 14:6)। अपनी गुप्त इच्छा के परामर्श से परमेश्वर किसी को, मसीह के बाहर उद्धार नहीं देता। यीशु भोर का चमकता हुआ तारा, दाऊद का मूल और वंश, अल्फा और ओमेगा, पहला और पिछला है (प्रकाशितवाक्य 22:13, 16)। वह कोने का सिरा है। ''और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में दूसरा कोई नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (प्रेरितों 4:12)।

परन्तु, मसीह ने हमेशा से ऐसा ऊंचा स्थान नहीं पाया था। पिन्तेकुस्त के दिन से पहले, उसकी विजयी मृत्यु के पश्चात, उद्धार उसके नाम में नहीं था और न ही प्रार्थना उसके नाम में होती थी। उसने कहा था, ''अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा'' (यूहन्ना 16:24)। इसलिए, अपने चेलों को प्रार्थना करनी सिखाते हुए, उसने उन्हें अपने नाम से प्रार्थना करनी नहीं सिखाई। उस समय ऐसी शिक्षा अनुपयुक्त होती। यह एक कारण है कि मत्ती 6:5-9 में चेलों की प्रार्थना आज पुरानी हो चुकी है। उस प्रार्थना के दिए जाने के बाद मानवीय इतिहास में सबसे बड़ी घटना घटी है। स्वर्ग और पृथ्वी का प्रबन्ध बदल चुका है। परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिलाकर और अपने दाहिने हाथ बिठाकर महिमा दी है। उसने न केवल उसे वह नाम दिया है जो सब नामों से ऊंचा है, बल्कि उसने सारे अधिकार और सामर्थ और शक्तियां उसके अधीन कर दी हैं। मनुष्यों के साथ-साथ स्वर्गदूतों को भी उसकी आराधना करने की आज्ञा दी गई है (इफिसियों 1:20-23; इब्रानियों 1:6)।

आज जब मैं और आप प्रार्थना करते हैं, तो हमें न केवल ''मैं जो हूं सो हूं'' (निर्गमन 3:14) का नाम ही पवित्र मानना चाहिए, बल्कि उसके इकलौते पुत्र का नाम भी पवित्र मानना चाहिए। हम उसके पुत्र को महिमा दिए बिना जिसके हाथों में सब वस्तुएं दी गई हैं, पिता की महिमा नहीं कर सकते (मत्ती 11:27; यूहन्ना 5:23)। स्वर्ग में स्वर्गदूत भी कहते हैं, ''कि वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है'' (प्रकाशितवाक्य 5:12)।

महान परमेश्वर ने यह ठहरा दिया है कि सब जातियों में मन फिराने तथा पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाए (लूका 24:46, 47)। पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में, जीवते परमेश्वर की कलीसिया के जन्मस्थल और जन्मदिन पर स्वर्ग से प्रेरितों पर पवित्र आत्मा उतरा था। उस दिन हर व्यक्ति को मन फिराने और ''यीशु मसीह के नाम से'' (प्रेरितों 2:38) पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी गई थी। उस दिन से, चेलों की प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं रही थी। उस दिन से, हर एक प्रार्थना यीशु के नाम से की जानी आवश्यक है (कुलुस्सियों 3:17); एक मसीही के जीवन में वचन या कार्य जो भी हो सब कुछ प्रभु यीशु के नाम से किया जाना आवश्यक है। परमेश्वर की इच्छा है कि हर एक जीभ उस नाम को अंगीकार कर ले जो सब नामों से ऊंचा है (फिलिप्पियों 2:9)। इससे पिता के नाम का अनादर नहीं होता है; इसके विपरीत, परमेश्वर ने ठहरा दिया है कि

जो कोई पुत्र की महिमा नहीं करता वह पिता की महिमा भी नहीं करता, जिसे उसने भेजा है (यूहन्ना 5:23)। फिर तो, सचमुच जब आप यीशु के नाम को पवित्र जानते और उसके पीछे चलते हैं तो आप पिता के नाम को भी पवित्र मानते हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]शेक्सपियर, *रोमियो एण्ड जूलियट,* एक्ट 2, सीन 2. [2]विलियम जेसेनियुस, *ए हिब्रयू एण्ड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामेन्ट,* अनु. एडवर्ड रोबिन्सन, सं. फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, और चार्ल्स ए. ब्रिग्स (ऑक्सफोर्ड: क्लेयरन्डन प्रैस, 1957), 217. [3]आम तौर पर इस पद का इस प्रमाण के रूप में दुरुपयोग किया जाता है कि किसी व्यक्ति को ''रैवरण्ड'' नहीं कहलाना चाहिए। प्रचारकों को ''रैवरण्ड'' या ''राइट रैवरण्ड'' या ''वरशिपफुल सर'' या ''मोस्ट वरशिपफुल सर'' या ''द वेरी राइट रैवरण्ड'' या ''फादर'' या किसी और धार्मिक नाम से कहलाने से इन्कार करना चाहिए, बेशक भजन 111:9 यह नहीं सिखाता है। कई बार, भाई अर्थात ''ब्रदर'' को भी एक पद के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि ऐसे भी लोग हैं जो प्रचारकों को ''फलां-फलां ब्रदर'' कहते हैं, जबकि कलीसिया के दूसरे सदस्यों को ''मिस्टर'' कहना पसन्द करते हैं। हमारे प्रभु ने धर्म में इन सभी पदों को अपनाने की मनाही की: ''परन्तु, तुम रब्बी न कहलाना: क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है: और तुम सब भाई हो। और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है'' (मत्ती 23:8, 9)।